SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों का सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

कुबेर सिंह गुरूपंच, Ph.D.
भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
शोभा अग्रवाल, Ph.D., वाणिज्य विभाग
अग्रसेन महाविद्यालय, पुरानी बस्ती, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
कुबेर सिंह गुरूपंच, Ph.D.
शोभा अग्रवाल, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/06/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/06/2023
Plagiarism : 01% on 20/06/2023

शोध सार

छत्तीसगढ की एक तिहाई जनसंख्या अनुसूचित जनजातियों की है। इन्हे आदिवासी, वनवासी, गिरीजन, भूमिजन वन्य जाति तथा जनजाति भी कहते है। छत्तीसगढ़ में निवासरत जनजातियों में प्रमुख कमार, अबुझमाड़िया, पहाडी कोरवा बिरहोर और बैगा को विशेष पिछड़ी जाति के रूप् में भारत सरकार द्वारा मान्य किया गया है। देश के कुल अनुसूचित जनजातियों का 8.44 प्रतिशत जनसंख्या छत्तीसगढ़ में निवासरत है जो राज्य की कुल जनसंख्या का 31.76 प्रतिशत है। मनुष्य स्वभावतः एक सामाजिक प्राणी है तथा वह अपने शारीरिक अस्तित्व को बनाये रखने के लिए कुछ आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं में सबसे आधारभूत है भोजन, वस्त्र और मकान। जनजाति वह समूह है जो सभ्यताकाल के जीवन प्रतिमानों से संबंधित है और इनमें अनेक विभिन्नताएं पाई जाती है। अध्ययन का प्रमुख उददेश्य छत्तीसगढ़ की प्रमुख जातियों एवं जनजातियों का सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन करना है तथा शासकीय योजनाओं का अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन एवं उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना है। प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ो का प्रयोग किया गया है तथा आंकड़ों का विश्लेषण विभिन्न सांख्यिकी तकनीको द्वारा किया गया है।

मुख्य शब्द

अनुसूचित जाति, जनजाति, समाज, संस्कृति.

छत्तीसगढ़ में कई जातियां और जनजातियां पाई जाती हैंः

छत्तीसगढ राज्य में धनवार (धनुहार) जनजाति बहुतायत में निवासरत है। इस जाति को लोड़ा एवं बैगा भी कहा जाता है ये लोग प्रायः जंगल, पहाड़ में रहते है और कंदमूल जंगली जानवरों का शिकार करके अपना पेट भरते है उन लोगों को तो सरकार ने आदिवासी घोसित किया है परंतु आज भी इस जाति पूर्ण रूप से लाभ नहीं मिल पा रहा है।

दक्षिण क्षेत्र की प्रमुख जनजाति गोंड है। जनसंख्या की दृष्टि से यह सबसे बड़ा आदिवासी समूह है। ये छत्तीसगढ़ के पूरे अंचल में फैले हुए हैं। पहले महाकौशल में सम्मिलित भूभाग का अधिकांश हिस्सा गोंडवाना कहलाता था। आजादी के पूर्व छत्तीसगढ़ राज्य के अंतर्गत आने वाली 14 रियासतों में 4 रियासत क्रमशः कवर्धा, रायगढ़, सारनगढ एवं शक्ति गोंड रियासत थी। गोंडों ने श्रेष्ठ सौन्दर्यपरक संस्कृति विकसित की है। नृत्य व गायन उनका प्रमुख मनोरंजन है। बस्तर क्षेत्र की गोंड जनजातियां अपने सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण समझी जाती हैं। ये लोग व्यवस्थित रूप से गाँवों में रहते हैं। मुख्य व्यवसाय कृषि कार्य एवं लकड़हारे का कार्य करना है। इनकी कृषि प्रथा डिप्पा कहलाती है। इनमें ईमानदारी बहुत होती है। बैगा जनजाति मंडला जिले के चाड़ा के घने जंगलों में निवास करने वाली जनजाति है। इस जनजाति के प्रमुख नृत्यों में बैगानी करमा, दशहरा या बिलमा तथा परधौनी नृत्य है। इसके अलावा विभिन्न अवसरों पर घोड़ा पैठाई, बैगा झरपट तथा रीना और फाग नृत्य भी करते हैं। नृत्यों की विविधता का जहां तक सवाल है तो निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि मध्यप्रदेश की बैगा जनजाति जितने नृत्य करती है और उनमें जैसी विविधता है वैसी संभवतः किसी और जनजाति में कठिनाई से मिलेगी। बैगानृत्य करधौनी विवाह के अवसर पर बारात की अगवानी के समय किया जाता है, इसी अवसर पर लड़के वालों की ओर से आंगन में हाथी बनकर नचाया जाता है। इसमें विवाह के अवसर को समारोहित करने की कलात्मक चेष्टा है। बैगा फाग होली के अवसर पर किया जाता है। इस नृत्य में मुखौटे का प्रयोग भी होता है। बस्तर की मुरिया जनजाति अपने सौन्दर्यबोध, कलात्मक रुझान और कला परम्परा में विविधता के लिए ख्यात है। इस जनजाति के ककसार, मांदरी, गेंड़ी नृत्य अपनी गीतात्मक, अत्यंत कोमल संरचनाओं और सुन्दर कलात्मक विन्यास के लिए प्रख्यात है। मुरिया जनजाति में माओपाटा के रूप में एक आदिम शिकार नृत्य–नाटिका का प्रचलन भी है, जिसमें उल्लेखनीय रूप से नाट्य के आदिम तत्व मौजूद हैं। गेंड़ी नृत्य किया जाता है, गीत नहीं गाये जाते। यह अत्यधिक गतिशील नृत्य है। प्रदर्शनकारी नृत्य रूप के दृष्टिकोण से यह मुरिया जनजाति के जातिगत संगठन में युवाओं की गतिविधि के केन्द्र घोटुल का प्रमुख नृत्य है, इसमें स्त्रियां हिस्सा नहीं लेती। ककसार धार्मिक नृत्य–गीत है। नृत्य के समय युवा पुरुष नर्तक अपनी कमर में पीतल अथवा लोहे की घंटियां बांधे रहते है साथ में छतरी और सिर पर आकर्षक सजावट कर वे नृत्य करते है। यह जनजाति रायपुर, दुर्ग, कीं धमतरी तथा बस्तर जिलों में बसी हुई है। बस्तरहा, छत्तीसगढ़ीयां तथा मरेथियां, हल्बाओं की शाखाएँ हैं। मरेथियाँ अर्थात् हल्बाओं की बोली पर मराठी प्रभाव दिखता है। हल्बा कुशल कृषक होते हैं। अधिकांश हल्बा लोग शिक्षित होकर शासन में ऊँचे–ऊँचे पदों पर पहुँच गये हैं, अन्य समाजों के सम्पर्क में आकर इनके रीति–रिवाजों में भी पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। नगेशियाः–––यह जनजाति अम्बिकापुर (उत्तर–पुर्व) के डिपाडीह, लखनपुर, अनुपपुर, राजपुर, प्रतापपुर, सीतापुर क्षेत्र, में बसी हुई है। नगेशिया जनजाति का मुख्य व्यवसाय कृषि कार्य एवं लकड़हारे का कार्य करना है, यह जनजाति जंगलों में निवास करने वाली जनजाति है।

अन्य जातियाँ, अहिरवार, कोरवा, उराँव, बिंझीया, भतरा, कँवर, कमार, माड़िय, मुड़िया, भैना, भारिया, बिंझवार, धनवार, नगेशिया, मंझवार, खैरवार, भुंजिया, पारधी, खरिया, गांड़ा या गड़वा, महरा, महार, माहरा, सिदार–बियार, विआर, नमोसुद्र।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा इन जातियों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए विभिन्न योजनाएं संचालित की जा रही है, जैसे छात्र भोजन, सहाय योजना, जवाहर आदिम जाति, उत्कर्ष विद्यार्थी योजना, निःशुल्क

सायकल प्रदाय योजना, आदर्श शाला पुरस्कार,छात्रावासी विद्यार्थीयों के लिए विशेष शिक्षण केन्द्र, आदिवासी सांस्कृतिक दलों को सहायता योजना, छात्रावासी विद्यार्थीयों की कम्प्यूटर प्रशिक्षण योजना, युवा कैरियर निर्माण योजना, स्वस्थ तन–स्वस्थ मन स्वास्थ सुरक्षा योजना, पायलेट एवं एयर होस्टेज योजना सामूहिक विवाह योजना ग्राम विकास योजना, एवं ग्राम गौरव योजना। इस प्रकार छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का अनुसूचित जाति एवं जनजातियो के परिवार के सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा हैं।

संदर्भ सूची

1. निरपुणे बसंत, *सहारिया,* मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद्, भोपाल।
2. अखिलेश एस., सामाजिक मानव शास्त्र साहित्य भवन, ,आगरा।
3. मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
4. National commission for scheduled Tribes...NCST.

****